सत्याग्रह और विदेशी मामले

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक ३१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १ अक्तूबर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

स्वराज्य, ग्रामराज्य और रामराज्य

[ता० ९–८–'५५ को कोटीपाम, आन्ध्र, में दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

स्वराज्य प्राप्तिके बाद गांवके लोगोंकी हालत सुधरेगी अैसी आशा लोगोंने रखी थी। अैसी आशा रखनेमें अुनकी कोअी गलती नहीं थी। अगर स्वराज्यमें जनताकी हालत न सुधरती हो तो अुस स्वराज्यकी कीमत भी क्या है? अिसलिअे गांवकी हालत सुधरेगी यह आशा रखना ठीक ही था।

लेकिन लोग समझे नहीं हैं कि स्वराज्यके बाद हमारी हालत सुधारना हमारे ही हाथमें है। वे समझे हैं कि जैसे पहले मुसलमानोंका या अंग्रेजोंका राज्य था वैसे अब कांग्रेसका राज्य आ गया है। लेकिन मुसलमानोंके और अंग्रेजोंके राज्यमें या और भी किसी राजाके राज्यमें आपके वोट किसीने मांगे नहीं थे। वे राज्य तो पुराने हो गये। वे राजाओंके राज्य थे, बादशाहोंके राज्य थे। लेकिन अभी जो हमारा स्वराज्य है, वह लोगोंका स्वराज्य है। यहां पर जो राज्य चलाते हैं वे लोगोंके चुने हुअे नौकर हैं। आप सब लोगोंको सत्ता दी गयी है कि आपका राज्य आप जैसा चलाना चाहते हैं वैसा चलाअिये और आपका राज्य चलानेके लिअे कौनसे नौकर रखने हैं यह आप ही तय कीजिये। अिस तरह आपसे वोट मांगा गया और आपने वोट दिया तो पांच सालके लिअे नौकर आपने कायम किये।

अिसका मतलब यह है कि यहां पर आप जो सब लोग बैठे हैं वे सबके सब बादशाह हैं, स्वामी हैं। लेकिन आपमें से हर व्यक्ति अलग-अलग स्वामी नहीं है, आप सब मिलकर स्वामी हैं। अिस तरहसे आप स्वामी तो बन गये, लेकिन फिर भी अपने पास सत्ता है अिसका आपको भान नहीं है। सत्ता किसीके देनेसे नहीं मिलती है। सत्ता या अधिकार तो अंदरसे प्राप्त होना चाहिये। वैसे हिन्दुस्तानके लोग मूर्ख नहीं हैं। बल्कि काफी समझदार हैं। अभी जो चुनाव हुआ था वह भी कितने सुन्दर ढंगसे हुआ था। लोगोंको लगता था कि यहां पर न मालूम क्या क्या होगा, कितनी लड़ाअियां होंगी। लेकिन अैसा कुछ भी नहीं हुआ। बाहरके देशोंके लोगोंको आश्चर्य लगा कि हिन्दुस्तानके लोग अपढ़ होने पर भी यहां पर अितने अच्छे ढंगसे चुनाव कैसे हो सका। अुसका कारण यह है कि हिन्दुस्तानके लोग दस हजार सालके अनुभवी लोग हैं। ये अपढ़ जरूर हैं लेकिन अनुभवी हैं अिसलिअे ज्ञानी हैं। अिसीलिअे यहांके चुनाव बड़े अच्छे ढंगसे हुअे।

हिन्दुस्तानके लोग यद्यपि समझदार हैं फिर भी वर्षोंसे अुनको गुलामीकी आदत पड़ गयी है और वे सोचते हैं कि सरकार मां-बापकी तरह हमारी चिंता करेगी। अिसलिअे अब जब कि अिन लोगोंके हाथमें सत्ता आयी है तब अुनको यह अनुभव होना चाहिये कि वास्तवमें हमारे हाथमें सत्ता आयी है।

अिस जमानेमें जो राज्य होता है वह राज्य नहीं होता है बल्कि वह प्राज्य होता है। वह लोगोंका होता है। पहलेके जमानेमें जो लोगोंको दबाता था वही राजा होता था। कहा जाता है कि जंगलका राजा शेर होता है। अिसके माने यह हैं कि जो जंगलके प्राणियोंको खा जाता है वह राजा होता है। संस्कृतमें जानवरोंके राजाको याने सिंह या शेरको मृगराज कहते हैं। अुस राजाके दर्शन होते ही सारे मृग थरथर कांपते हैं। अिस प्रकारकी राजसत्ता अब नहीं चलेगी। अब तो राजसत्ता याने सेवाकी सत्ता होगी। माताको घरमें क्या अधिकार होता है? बच्चेको भूख लगी है तो अुसे दूध पिलाना यह माताका पहला अधिकार है, बच्चेको सुलाकर फिर सोना यह नंबर दोका अधिकार है, बच्चा बीमार पड़ा तो रातको जागना यह नंबर तीनका अधिकार है और घरमें खानेकी चीजें कम हों तो पहले बच्चेको खिलाना और खिलानेके बाद कुछ नहीं बचे तो खुद फाका करना यह नंबर चारका अधिकार है। आजका हमारा मातृराज है न? तो अुसके नमूने हमें गांव गांवमें दिखाने होंगे।

गांव-गांवमें जो बुद्धिमान, संपत्तिमान और समझदार लोग होंगे वे गांवके माता-पिता बन जायें और गांवकी सेवा करके गांवका राज्य चलायें। जो बुद्धिमान पिता होते हैं वे अपने लड़कोंके लिअे यही अिच्छा करते हैं कि हमारे लड़के हमसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। पिताको तब खुशी होती है जब अुसका लड़का आगे बढ़ जाता है, गुरुको तब खुशी होती है जब अुसका शिष्य दुनियामें अुसका विस्मरण कराता है। लोग गुरुका नाम भूल जाते हैं और शिष्यको ही याद करते हैं तो गुरुको खुशी होती है। गुरुको लगता है कि मैंने अपने शिष्यको ज्ञान दिया और फिर भी मेरा नाम दुनियामें कायम रहा तो मैंने ज्ञान ही क्या दिया? मेरा नाम मिट जाना चाहिये और शिष्यका नाम चलना चाहिये तभी मैं सच्चा गुरु हूं। अिसलिअे गांवके जो बुद्धिमान लोग होंगे वे अिस तरहसे काम करेंगे कि सब लोग अुनसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। तो फिर ग्रामराज्यका रामराज्य बनेगा।

स्वराज्यके माने हैं सारे देशका राज्य। जब दूसरे देशकी सत्ता अपने देश पर नहीं रहती है तो स्वराज्य हो जाता है। लेकिन जब प्रत्येक गांवमें स्वराज्य हो जाता है तो अुसको ग्रामराज्य कहा जाता है। गांवके सब लोग बुद्धिमान बनें हैं, किसी पर सत्ता चलानेकी जरूरत नहीं पड़ती है तो अुसका नाम है रामराज्य। जब गांवके झगड़े शहरकी अदालतमें जाते हैं और शहरके लोग अुनका फैसला करते हैं तो अुसका नाम है गुलामी, दास्य या पारतंत्र्य। गांवके झगड़े गावमें ही मिटाये जाते हैं, अिसका नाम है

www.vinoba.in

स्वातंत्र्य या स्वराज्य। और गांवमें झगड़े नहीं होते हैं अिसका नाम है रामराज्य। हमें पहले ग्रामराज्य बनाना होगा और फिर राम-राज्य। देशका स्वराज्य तो हो गया है। अब हमें ग्रामराज्य बनाना है। अिसीलिअे भूदान-यज्ञ चल रहा है। हम गांव-गांव जाकर लोगोंको समझाते हैं कि तुम्हारे गांवका भला किसमें है, अिस पर तुम खुद सोचो। अपने गांवको अेक राष्ट्र समझो। आज आप आंध्र राष्ट्रकी जय और भारत माताकी जय बोलते हैं, अुसी तरह हमारे गांवकी जय बोलना चाहिये। प्रत्येक ग्रामकी जय होती है तो देशकी जय होगी। गांव-गांवमें स्वराज्य बनेगा तो अपना स्वराज्य अच्छा बनेगा। हमें प्रत्येक गांवमें राज्य चलाना होगा। अेक देशमें विचारके जितने विभाग होते हैं और जितने काम होते हैं अुतने सारे गांवमें होंगे। वहां पर आरोग्य-विभाग होता है तो गांवमें भी आरोग्य-विभाग होना चाहिये, वहां पर अुद्योग-विभाग, कृषि-विभाग, तालीम-विभाग, न्याय-विचारणा-विभाग होते हैं तो गांवमें भी अुतने सारे विभाग होने चाहिये। वहां पर परराष्ट्रके साथ संबंध आता है तो ग्राममें भी परग्रामके साथ संबंध आयेगा।

ग्राम-ग्राममें विद्यापीठ होना चाहिये। 'ग्रामे ग्रामे विश्वविद्या-पीठम्' — यह है सच्चा ग्रामराज्य। किसीने हमसे कहा कि प्राथ-मिक शाला हर गांवमें होनी चाहिये, हाअीस्कूल बड़े गांवमें होने चाहिये और विसाखापट्टनम् जैसे शहरमें कालेज होना चाहिये। तो मैंने अुनसे कहा कि अगर अीश्वरकी अैसी योजना होती तो गांवमें दस साल की अुम्र तकके ही लोग रहते। फिर अुसके बाद पंद्रह-बीस साल तककी अुम्रके लोग बड़े गांवमें रहते और अुस अुम्रसे अधिक अुम्रवाले लोग विसाखापट्टनम् जैसे शहरमें रहते। लेकिन जब जन्मसे लेकर मरण तकका सारा व्यवहार गांवमें ही चलता है तो पूरी विद्या गांवमें क्यों नहीं चलनी चाहिये? ये लोग अैसे दरिद्री हैं कि अेक अेक प्रांतमें अेक अेक युनिवर्सिटी स्थापन करनेकी योजना करते है। लेकिन मेरी योजनामें हर गांवमें युनिवर्सिटी होगी। सोचनेकी बात है कि क्या गांवको टुकड़ा रखेंगे? चार साल तककी शिक्षा याने अेक टुकड़ा गांवमें रहेगा। फिर गांव वाले आगेकी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अुन्हें गांव छोड़कर जाना पड़ेगा। अिसके कोअी मानी नहीं हैं। मेरे ग्राममें मुझे पूरी तालीम मिलनी चाहिये। यह मेरा ग्राम टुकड़ा नहीं है, यह तो पूर्ण है। ये लोग कहते हैं कि यह भी टुकड़ा है और वह भी टुकड़ा है और यह सब मिलकर पूर्ण है। हमारी योजनामें अिस तरह टुकड़े टुकड़े जोड़कर पूर्ण बनानेकी बात नहीं है। हम चाहते हैं कि हर गांवमें राज्यके सब विभागोंके साथ अेक परिपूर्ण राज्य होना चाहिये।

अिस तरह हर छोटे-छोटे गांवमें राज्य होगा तो हर गांवमें राज्यकार धुरंधरोंका समूह होगा। गांव-गांवमें अनुभवी लोग होंगे। दिल्लीवालोंको राज्य चलानेमें कभी मुश्किल मालूम हुअी तो वे सोचेंगे कि दो चार गांवोंमें चला जाय और वहांके लोग किस प्रकारसे राज्य चलाते हैं यह देखा जाय, क्योंकि राज्यशास्त्र-पारंगत लोग गांव-गांवमें रहते हैं। अिसलिअे गांव-गांवमें विद्यापीठ होना चाहिये। आज तो लोग कहते हैं कि गांवोंमें राज्यशास्त्रके ज्ञाता कोअी नहीं हैं, जिलेमें भी राज्यशास्त्रके ज्ञाता नहीं हैं। सारे आंध्र प्रदेशमें राज्यशास्त्रके ज्ञाता दो तीन ही होंगे। जब स्वराज्य चलाना चाहते हों तो राज्यशास्त्रके ज्ञाता अितने कम होनेसे कैसे काम चलेगा? अिसलिअे गांव-गांवमें अैसे ज्ञाता होने चाहिये। आज हालत अैसी है कि पंडित नेहरूने अेक दफा कहा था कि हमें जरा प्रधानमंत्री-पदसे छुट्टी दीजिये तो सारे लोग घबड़ा गये और अुनसे कहने लगे कि आपके बिना हमारा कैसे चलेगा? यह कोअी स्वराज्य नहीं है। असली स्वराज्य तो वह है जब पंडित नेहरू मुक्त होनेकी अिच्छा प्रकट करते हैं तो लोग अुनसे कहेंगे कि जी हां, जरूर मुक्त हो जाअिये; आपने आज तक बड़ी सेवा की है, आपको मुक्त होनेका हक है।

हमें अिस तरहसे सारा ढांचा बनाना है। जो राजसत्ता दिल्लीमें अिकट्ठी हुअी है अुसे गांव-गांवमें बांटना है। हम तो परमेश्वरके भक्त हैं अिसलिअे हम अीश्वरका ही अुदाहरण सामने रखें। अीश्वरने अगर अपनी सारी अक्ल वैकुंठमें रखी होती और किसी प्राणीको अक्ल ही नहीं दी होती तो दुनिया कैसे चलती? फिर तो किसी मनुष्यको अक्लकी जरूरत पड़ती तो वैकुंठमें टेलीग्राम भेजकर थोड़ीसी अक्ल मंगवानी पड़ती। आज आपके मंत्रियोंको विमानसे दौड़ना पड़ता है तो फिर भगवानको कितना दौड़ना पड़ता? लेकिन भगवानने अैसी सुन्दर योजना की है कि सबको अक्ल बांट दी है। मनुष्यको अक्ल दी है, घोड़ेको, गधेको, सांपको, बिच्छूको, कीड़ेको सबको अक्ल दी है। किसी अेक जगह पर बुद्धिका भंडार नहीं रखा है। अिसलिअे कहा जाता है कि भगवान निश्चिंत होकर क्षीरसागरमें निद्रा लेते हैं। क्या हमारे मंत्री अिस तरह निद्रा ले सकते हैं? लेकिन भगवान अिस तरह निद्रा लेते हैं कि अिसका पता भी नहीं चलता है कि वे वहां पर हैं। फिर ये हमारे भाअी कहते हैं कि वह है ही नहीं। क्योंकि वह अपनी सत्ता नहीं चलाता है और वह अितना क्षमाशील है कि निश्चिंत होकर सो जाता है फिर जाहे कोअी अुसको माने या न माने। असली स्वराज्य तो वह होगा जब दिल्लीके लोग सोते होंगे। दिल्लीमें क्षीर-सागर है और वहां पर हमारे प्रधानमंत्री सोये हुअे हैं अैसा होगा तो हम समझेंगे कि सच्चा स्वराज्य आया है। लेकिन आज तो हम सुनते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री अठारह घंटे तक जागते हैं। क्या यह भी कोअी स्वराज्य है?

पहले लंदनमें सत्ता थी। वहांसे पार्सल होकर अब दिल्ली आयी है। यह तो बड़ी कृपा हुअी। लेकिन वह पार्सल दिल्लीमें ही अटक गया है। अुसे अब गांव-गांवमें पहुंचाना है। हमें लोगोंको स्वराज्यकी शिक्षा देनी है तो यह सारा करना होगा। अिसका नाम है शासन-विभाजन। शासनका आज जो केंद्रीकरण हुआ है अुसके बदले शासनका विभाजन करना होगा और हर गांवमें शासन या सत्ता बांटनी होगी। फिर जब गांवके सबके सब लोग राज्यशास्त्रके ज्ञाता हो जायंगे और गांवके सब लोग कभी झगड़ा करेंगे ही नहीं तो अुस हालतमें शासन-मुक्ति हो जायगी और रामराज्य आयेगा।

यह सब हमें करना है। अिसीलिअे भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। हम गांववालोंसे कहते हैं कि तुम्हारे गांवकी हालत सुधारनेके लिअे तुम लोगोंको कमर कसके तैयार हो जाना चाहिये। तुम्हारे गांवमें भूमिहीन हैं तो अुन्हें जमीन देनी चाहिये। जमीन कहांसे दोगे? क्या दूसरे गांवकी जमीन लाओगे? अपने ही गांवकी जमीनका अेक हिस्सा अुनको देना चाहिये। फिर गांव-गांवमें अुद्योग खड़े करने चाहिये। आपको निश्चय करना होगा कि हम बाहरका कपड़ा नहीं खरीदेंगे, हम अपने गांवमें कपड़ा बनाकर वही पहनेंगे। मैं मानता हूं कि जो बाहरका कपड़ा पहनते हैं वे नंगे हैं। अभी मेरे सामने जो लोग बैठे हैं वे सारे बाहरका कपड़ा पहने हुअे हैं अिसलिअे यह निर्लज्ज और नंगोंकी सभा है। अगर अिन लोगोंको बाहरसे कपड़ा नहीं मिलेगा तो वे फटे हुअे कपड़े पहनेंगे, फिर लंगोटी ही पहनेंगे और आखिरमें नंगे रहेंगे। क्योंकि अुनके पास कपड़ा बनानेकी विद्या नहीं है।

यह सब काम सरकारके कानूनसे नहीं होगा। कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि भूदानका काम बाबाको क्यों करना पड़ता है, सरकार अपनी जमीन क्यों नहीं बांटती है? सरकार जमीन बांटेगी तो ग्रामराज्य नहीं होगा, दिल्लीराज्य होगा। लंदनराज्यके बदले

www.vinoba.in

अब दिल्लीराज्य आया है। लेकिन हम चाहते हैं कि दिल्ली-राज्यके बदले गांवका राज्य आये। जिस तरह हमारी भूख मिटानेके लिअे हमको ही खाना पड़ेगा, दूसरा कोअी हमारे लिअे नहीं खा सकता है, अुसी तरह हमारे ग्रामराज्यके लिअे हमींको भूदान करना होगा, दूसरे नहीं कर सकते। फिर आज जैसे लोग दिल्लीमें बैठे-बैठे सोचते हैं कि अपने देशमें बाहरसे कौनसी चीजें आनी चाहिये और देशकी कौनसी चीजें बाहर जानी चाहिये, अुसी तरह गांव-गांवके लोग सोचेंगे कि अपने गांवमें कौनसी चीजें बाहरसे आनी चाहिये और गांवकी कौनसी चीजें बाहर जानी चाहिये। आज तो जिसकी मर्जीमें जो आया अुसके अनुसार वह बाहरकी चीजें खरीदता जाता है। लेकिन अिसके आगे यह नहीं चलेगा। सारे गांववाले मिलकर चर्चा करेंगे और निर्णय करेंगे। अगर किसीको गुड़की जरूरत हुअी तो गांववाले अुस बारेमें सोचेंगे और तय करेंगे कि अिस साल गांवमें गुड़ नहीं बन सकता है अिसलिअे अेक सालके लिअे बाहरका गुड़ खरीदना होगा। लेकिन गांवके लोग बाजारमें जाकर गुड़ नहीं खरीदेंगे। गांवकी दुकानसे खरीदेंगे। अिस तरह गांवके लोग बाहरका गुड़ गांवकी दुकानसे अेक सालके लिअे खरीदेंगे और फिर गांवमें गन्ना बोकर अगले सालके लिअे गुड़ पैदा करेंगे। और गांवकी दुकानमें वही गुड़ रखा जायगा और वही गुड़ खरीदा जायगा।

अिस तरह सारा गांव अेक हृदयसे सोचेगा। गांवमें पांच सौ लोग रहेंगे तो गांवमें अेक हजार हाथ होंगे, अेक हजार पांव होंगे, पांच सौ दिमाग होंगे लेकिन दिल अेक होगा। गीतामें अेकादश अध्यायमें विश्वरूप दर्शनकी बात है। विश्वरूप दर्शनमें हजारों हाथ हैं, हजारों पांव हैं, कान हैं, आंखें हैं, लेकिन अुसमें आपको यह नहीं मिलेगा कि हृदय हजारों हैं। विश्वरूपका हृदय अेक ही होगा। अुसी तरह गांवका अेक हृदय होगा। पांच सौ दिमाग होंगे। वे चर्चा करके बात तय करेंगे। यह हमारी सर्वोदयकी योजना है।

अब आप मुझे बताअिये कि यह सर्वोदयका काम आप करेंगे या कर्नूलवाले और दिल्लीवाले करेंगे? यह ठीक है कि आप लोग अपनी योजना करेंगे तो अुसमें कर्नूलवाले और दिल्लीवाले आपको कुछ मदद देंगे। लेकिन योजना तो आपको ही अपने गांवके लिअे करनी होगी।

हम जानते हैं कि यह सब करनेमें कुछ समय लगेगा। लेकिन ज्यादा समय नहीं लगेगा। अेक गांवमें अेक सालका समय लगा तो हिन्दुस्तानके पांच लाख गांवोंमें कितना समय लगेगा, अिस तरहका त्रैराशिक नहीं किया जा सकता है। आपके गांवके आम पकने शुरू होते हैं तो सारे हिन्दुस्तानके पांच लाख गांवोंके आम पकने लग जाते हैं। अिसलिअे आपके गांवमें ग्रामराज्य बननेमें जितना संमय लगेगा अुतने समयमें कुल हिन्दुस्तानके पांच लाख गांवोंमें रामराज्य बनेगा।

आज मैंने आपके सामने सूत्र रूपमें विचार रखा है। पहली बात है केंद्रीय-स्वराज्य। दूसरी बात है विभाजित स्वराज्य। और तीसरी बात है राज्यमुक्ति अथवा रामराज्य। अब अुसको रामराज्य कहना है या अराज्य, यह प्रत्येककी अपनी-अपनी मर्जीकी बात है। अीश्वर नहीं है, यह भी कह सकते हो और अीश्वर क्षीरसागरमें सोया हुआ है, यह भी कह सकते हो। लेकिन अीश्वर पसीना-पसीना होकर काम कर रहा है यह नहीं कह सकते हो। या तो अीश्वर नहीं है या वह अकर्ता होकर बैठा है। अीश्वर करता है और सब दूर अपनी सत्ता चलाता है यह बात नहीं होनी चाहिये। यही तत्त्वज्ञान, यही ब्रह्मविद्या हमें अपने देशमें लानी है।

हम चाहते हैं कि आप सब लोग अुत्साहसे भाअी-भाअी बनकर काममें लग जायं। कुछ लोग पूछते हैं कि विनोबाजीकी योजना परस्परावलंबनकी योजना नहीं है, स्वावलंबनकी योजना है। अितना तो वे कबूल करते हैं कि विनोबाकी योजना परावलंबनकी योजना नहीं है। परंतु वे कहते हैं कि परस्परावलंबन चाहिये। वैसे हम भी परस्परावलंबन चाहते हैं। आज बाबाने दूध पिया तो क्या बाबाने खुद गायका दूध दुहा था? लोगोंने बाबाके लिअे सारा अिन्तजाम किया था। अिस तरह बाबा अुससे जो सेवा बनती है वह करता जाता है और लोग अुसके लिअे अिन्तजाम करते हैं। परंतु परस्परावलंबन दो प्रकारका होता है। अेक अंधे और लंगड़ेका परस्परावलंबन होता है। अंधा देख नहीं सकता है परंतु चल सकता है और लंगड़ा देख सकता है परंतु चल नहीं सकता है। अिसलिअे दोनों परस्परावलंबन या सहयोग करते हैं। लंगड़ा अंधेके कंधे पर बैठता है। वह देखनेका काम करता है और लंगड़ा चलनेका काम करता है। अिस तरह क्या आप समाजके कुछ लोगोंको अंधा रखना चाहते हैं और कुछ लोगोंको लंगड़ा रखना चाहते हैं और फिर दोनोंका परस्परावलंबन चाहते हैं? बाबा भी परस्परावलंबन चाहता है। परंतु वह चाहता है कि दोनों आंखवाले हों, दोनों पांववाले हों और फिर हाथमें हाथ मिलाकर दोनों साथ-साथ चलें। बाबा समर्थोंका परस्परावलंबन चाहता है। और ये लोग विकलांग या अक्षम लोगोंका परस्परावलंबन चाहते हैं।

बाबा भी परस्परावलंबन चाहता है। हम जानते हैं कि सारी की सारी चीजें अेक गांवमें नहीं बन सकती हैं। अेक गांवको दूसरे गांवके साथ और गांवोंको शहरोंके साथ सहयोग करना होता है। लेकिन हम यह नहीं चाहते कि गांवोंमें शहरोंसे चावल कूटकर, आटा पिसवाकर और चीनी बनवाकर लायी जाय। हम चाहते हैं कि ये चीजें गांवमें ही बनें। लेकिन गांवोंमें चश्मा, थर्मामीटर, लाअुड-स्पीकर जैसी चीजोंकी जरूरत पड़ी तो वे चीजें शहरसे लायी जायं। आज यह होता है कि शहरवाले गांववालोंके अुद्योग खुद करते हैं। गांवमें कच्चा माल होता है और अुसका पक्का माल गांवमें ही बन सकता है। लेकिन आज शहरोंमें यंत्रोंके द्वारा पक्का माल बनाया जाता है। और अुधर परदेशका जो माल शहरोंमें आता है अुसे रोकते नहीं। हम चाहते हैं कि गांवके अुद्योग गांवमें चलें और परदेशसे जो माल आता है अुसे रोकनेके लिअे वह माल शहरोंमें बनाया जाय। अगर गांवके अुद्योग खत्म होंगे तो न सिर्फ गांवों पर संकट आयेगा बल्कि शहरों पर भी संकट आयेगा। फिर गांवके बेकार लोगोंका शहरों पर हमला होगा और अुधरसे परदेशी मालका हमला तो होता ही रहेगा। अिस तरह दोनों हमलोंके बीचमें शहर-वाले पिस जायंगे। अिसलिअे हमारी योजनामें गांवों और शहरोंके बीच अिस तरहका सहयोग होगा कि गांववाले अपने अुद्योग गांवमें चलायेंगे और शहरवाले परदेशसे आनेवाली चीजें शहरमें बनायेंगे। अिस तरह प्रत्येक गांव पूर्ण होगा और पूर्णोंका सहयोग होगा।

विनोबा

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०–१०–० डाकखर्च ०–४–०

सर्वोदय

लेखक: **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत २–८–० डाकखर्च ०–१२–०

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

[तीसरी आवृत्ति]

लेखक: **जुगतराम दवे**; अनु० **रामनारायण चौधरी**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–१४

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१ अक्तूबर १९५५

सत्याग्रह और विदेशी मामले

गोआके प्रश्नने हमारा ध्यान सत्याग्रह-सम्बन्धी अपने खयालों पर फिरसे विचार करने और अुनमें सुधार करनेकी जरूरत पर जितना खींचा है अुतना और किसी प्रश्नने पहले कभी नहीं खींचा था। जब तक गांधीजी हमारे बीच थे, तब तक दलगत समस्याओंको शांतिपूर्ण और अहिंसक ढंगसे हल करनेके लिअे की जानेवाली सीधी कार्रवाअीके अिस अनोखे अुपायसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंमें मार्ग दिखाने और आदेश देनेका काम अुनका रहता था। अब चूंकि वे हमारे बीच नहीं रहे, यह हमारा फर्ज हो हो गया है कि हम अिस बातको याद करें और निर्णय करें कि वास्तवमें सत्याग्रह क्या चीज है, जो अुसके आविष्कारकके शब्दोंमें अेक अचूक हथियार है और किसी भी परिस्थितिमें हमें निश्चित अुपाय बताता है, बशर्ते हम सही ढंग और नम्र भावसे अुसका दरवाजा खटखटायें।

हम जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीकामें यह अनोखा हथियार गांधीजीको अुस परिस्थितिमें सूझा था, जो वहां बसे हुअे हमारे देशके स्त्री-पुरुषोंके स्वाभिमानके लिअे चुनौती-स्वरूप थी। गांधीजीने अुस सभाका बड़ा स्पष्ट और मार्मिक वर्णन दिया है, जहां अुन्हें अिस चुनौतीका वीरतापूर्ण किन्तु अहिंसक ढंगसे सामना करनेका मार्ग सूझा था।* वह मार्ग अन्यायपूर्ण या अनैतिक महसूस होनेवाले कानूनका 'सविनय भंग' करनेका प्रसिद्ध मार्ग था; अिसे वही ले सकते थे जो अुस कानूनके मातहत कष्ट भोगते थे और तभी ले सकते थे जब अुचित और सन्तोषप्रद राहत पानेके सारे वैधानिक या कानूनी अुपाय असफल सिद्ध हो जाते थे।

अैसा ही अवसर भारतमें हमारी संपूर्ण प्रजाके जीवनमें सन् १९२०–२१ में आया था, जब राष्ट्रके नाते हमारे स्वाभिमानको जलियांवाला बागके करुण हत्याकांड, खिलाफतके बारेमें ब्रिटिश सरकारके वचनभंग और रौलट बिलके द्वारा चुनौती दी गअी थी। अुस समय हमारा संपूर्ण राष्ट्र जड़से हिल अुठा था। अुस चुनौतीके अुत्तरके रूपमें गांधीजीने अपने अहिंसक असहयोगके विचारका प्रतिपादन किया था। वह सत्याग्रहके शस्त्रागारमें दूसरे अत्यन्त शक्तिशाली शस्त्रकी शोध थी।+ अिसने हमारे लोगोंके, जो विदेशी हुकूमत द्वारा किये गये गंभीर अपमानकी तीव्र वेदना भोग रहे थे, हृदयोंमें बढ़ रही क्रोध और विरोधकी भावनाको सही रास्ता दे दिया। अहिंसक असहयोगके विचारने हमारी निहत्थी प्रजाकी निराशा और असहायताकी भावनाओंको राष्ट्र-निर्माणकी रचनात्मक प्रवृत्तियोंकी तरफ मोड़ दिया। थोड़ेमें, भारतमें ब्रिटिश शासनके विरुद्ध अहिंसक असहयोग अपने विधायक पक्षके साथ, जो बादमें रचनात्मक कार्यक्रमके नामसे प्रसिद्ध हुआ, मिलकर स्वतंत्रताके हमारे राष्ट्रीय दावेका आधार बन गया। और तबसे लेकर हमारी आजादी हासिल कर लेने तक यह अहिंसक असहयोग, स्व० लाला लाजपतरायके शब्दोंमें, भारतीय राजनीतिका ककहरा बन गया। और सविनय कानूनभंगका आश्रय बार-बार सरकारके अन्यायको दूर करानेके लिअे लिया गया; अुदाहरणके लिअे, बोरसद सत्याग्रह, नागपुर झंडा सत्याग्रह, बारडोली सत्याग्रह वगैरा। अिनसे हमारी जनताको सत्याग्रह या सविनय कानूनभंगके तरीके और पद्धतिकी तालीम मिली। और १९३० तक हम यह घोषणा कर सके कि सत्याग्रहसे हम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करेंगे। यह अहिंसक हथियार स्वतंत्रता-प्राप्तिका साधन माना जाने लगा। यहां अिस नये हथियारकी पद्धतिके अध्ययनकी दृष्टिसे यह बात ध्यानमें रखने जैसी है कि स्वराज्य जैसे विशाल और व्यापक ध्येयको भी ग्यारह मुद्दोंके रूपमें अेक विशिष्ट मांगका ठोस रूप दे दिया गया। अिन मुद्दोंने स्पष्ट शब्दोंमें अुस राहतकी व्याख्या कर दी, जो देशके लोगोंको सविनय कानूनभंगके अंतिम हथियारका सहारा लेनेसे रोक सकती थी, क्योंकि वह विरोधीके 'हृदय-परिवर्तन' को बताती थी।

अन्तमें राष्ट्रने नमक-कानून तोड़नेका निर्णय किया, जो निश्चित ही बुरा और अन्यायी कानून था। हम जानते हैं कि अुसका क्या नतीजा हुआ।

अुपरोक्त चर्चासे यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे पास सत्याग्रहके दो हथियार थे — अेक सविनय कानूनभंग और दूसरा, अहिंसक असहयोग, जिसके साथ रचनात्मक कार्यक्रमका विधायक पक्ष जुड़ा हुआ था। सत्याग्रहका अुपयोग विदेशी हुकूमतके हमलेसे राष्ट्रीय स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे किया जाता था। आगे चल कर अुसने विदेशी शासनके खिलाफ और पूर्ण स्वराज्यकी प्राप्तिके लिअे अहिंसक विद्रोहका रूप ले लिया। दक्षिण अफ्रीका और भारत दोनों जगह विरोधी तो ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता ही थी। वह लड़ाअी अेक स्वतंत्र देशकी दूसरे स्वतंत्र देशके खिलाफ नहीं थी। वह दबाये हुअे लोगोंकी अपने शासकोंके विरुद्ध की गअी लड़ाअी थी। अुसे घरेलू प्रश्न कहा जा सकता है। वह लड़ाअी अेक राष्ट्रके भीतर लड़ी गयी थी, दो स्वतंत्र सार्वभौम राष्ट्रोंके बीचकी आन्तर-राष्ट्रीय लड़ाअी नहीं थी। गोआका प्रश्न हमारे सामने आन्तर-राष्ट्रीय लड़ाअीकी समस्या खड़ी करता है। यह नया प्रकार स्वभावतः अिस नयी परिस्थितिसे पैदा होता है कि आज हम अेक स्वतंत्र और सार्वभौम राज्य बन गये हैं।

अिस परिस्थितिसे दो प्रश्न पैदा होते हैं: पहला, क्या हम अेक राष्ट्रके नाते अपनी शिकायतें दूर करानेके लिअे अपनी स्वराज्य सरकारके खिलाफ अिस हिंसक हथियारका अुपयोग कर सकते हैं? यह घरेलू प्रश्न है। दूसरा प्रश्न है, क्या हम अेक राष्ट्रके नाते और अेक सार्वभौम सत्ताधारी राज्यके नाते अपने आन्तर-राष्ट्रीय मामलोंमें पैदा होनेवाले काश्मीर या गोआके जैसे प्रश्नोंको हल करनेके लिअे अिस हथियारका अुपयोग कर सकते हैं?

पहला प्रश्न हमारे लिअे बिलकुल नअी चीज नहीं है, क्योंकि यह सत्याग्रह अुस सत्याग्रहके जैसा ही है जो हमने ब्रिटिश हुकूमतके खिलाफ किया था, हालांकि आज बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण फर्क यह हो गया है कि सरकार हमारी है और लोकशाही ढंगकी है। अिस प्रश्नकी हम यहां अधिक चर्चा नहीं करेंगे।

दूसरा प्रश्न नयी चीज है। काश्मीरमें हमारे भूभाग पर हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तानने आक्रमण कर दिया था। सत्याग्रह यानी युद्धके अहिंसक या 'नैतिक' विकल्पका सहारा नहीं लिया जा सका; सच पूछा जाय तो किसीको अुसकी बात कभी सूझी ही नहीं, किसीकी ओरसे अुसका सुझाव आना तो दूर रहा। भारत सरकारने तुरन्त देशकी सुरक्षाके लिअे काश्मीरमें अपनी सेना भेज दी; और जैसा कि हम जानते हैं, गांधीजीने अुसे

---

* गांधीजी लिखित 'सत्याग्रह अिन साअुथ अफ्रीका' में 'सत्याग्रहका जन्म' नामक बारहवां प्रकरण देखिये। प्रकाशक – नवजीवन, अहमदाबाद – १४। कीमत ४–०–०; डा० खर्च १–२–०।

+ गांधीजीने अुन परिस्थितियों और वातावरणका बड़ा मार्मिक वर्णन किया है, जिसमें अुन्होंने यह शोध की थी। देखिये 'आत्मकथा' (गुजराती), भाग – ४: अध्याय ३६। प्रकाशक – नवजीवन, अहमदाबाद–१४। कीमत २–०–०; डा० खर्च ०–१२–०।

www.vinoba.in

अपना आशीर्वाद देकर यह बात अच्छी तरह दिखा दी कि सत्याग्रहका अुनका सिद्धान्त युरोपीय शान्तिवाद जैसी वस्तु नहीं है। सत्याग्रहमें अहिंसा कोअी नकारात्मक धर्म नहीं है, बल्कि वह बहादुराना, सक्रिय और सीधी कार्रवाअीका अेक विधायक सिद्धान्त है। अगर हम अुसका पूरी तरह पालन न कर सकें तो हमें हिंसाके जरिये भी कार्रवाअी तो करनी ही चाहिये; हम कमजोरी दिखाकर या मिथ्या अहिंसाका आचरण करके किसीके अन्यायके सामने या विदेशी आक्रमणके सामने झुक नहीं सकते।

गोआमें अिससे थोड़ी अलग स्थिति है। हम पुर्तगाली हुकूमतसे मुक्त करके अुसे वापिस लेना चाहते हैं, जो वहां औपनिवेशिक सत्ताके नाते पिछली लगभग चार सदियोंसे जमी हुअी है। प्रश्न यह है: क्या हम अपनी सेनाओं द्वारा अुस पर हमला कर दें? क्योंकि अन्तमें 'पुलिस कार्रवाअी' का वही मतलब होता है। जाहिर है कि यह कदम राज्य ही अुठा सकता है। अुसका मतलब होगा पुर्तगालके खिलाफ लड़ाअीकी घोषणा करना, जिसमें युद्ध और शांतिसे सम्बन्ध रखनेवाले आन्तर-राष्ट्रीय नियमोंका प्रश्न आयेगा। स्पष्ट है कि यह विचार सत्याग्रहका नहीं है, अिसलिअे हम अुसे छोड़ सकते हैं। सत्याग्रहके लिअे यह जरूरी है कि हम कमसे कम शान्तिपूर्ण और अुचित साधनोंका सहारा लें।

यहां हमें आन्तर-राष्ट्रीय बातचीत और कूटनीतिसे मदद मिल सकती है। अिसे हम सत्याग्रहकी सीधी कार्रवाअीकी तुलनामें अुस साधनकी तरह मान सकते हैं जिसे हमारे स्वातंत्र्य-युद्धके दिनोंमें 'वैधानिक अुपाय' कहा जाता था। अैसे अुपाय अब आन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्रमें हमारे लिअे खुले हैं, क्योंकि अब हम अेक स्वतंत्र और सार्वभौम सत्ताधारी राष्ट्र हैं। सत्याग्रह अुनकी आवश्यकता और महत्त्वको कबूल करता है और अुन्हें अपनी पद्धतिमें पहली आवश्यक चीज मानता है। गोआका प्रश्न हल करनेमें हम अुन अुपायोंका सहारा ले रहे हैं। हमारी सरकारको अिस दिशामें पुर्तगालसे भारतके कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ देने और गोआकी सीमाको बन्द कर देनेकी हद तक जाना पड़ा है। यह अेक प्रकारका अहिंसक असहयोग है, जो पुर्तगालके साथके हमारे आन्तर-राष्ट्रीय सम्बन्धोंमें आकार ग्रहण कर रहा है। हमें अुसी तरह अिसे समझना चाहिये। भारतके लोग अपनी सरकारके साथ मिल कर काम करें तो यह चीज धीरे धीरे पुर्तगाली भारतके खिलाफ शक्तिशाली कार्रवाअीका रूप ले सकती है। अेक प्रकारकी आर्थिक नाकाबंदी भी आन्तर-राष्ट्रीय मामलोंमें सत्याग्रहका अेक अंग बन सकती है।

गोआके प्रश्नका अेक दूसरा पहलू भी है, जो भारतकी कुछ राजनीतिक पार्टियोंके यह मामला अपने हाथमें ले लेनेसे पैदा हुआ है। जैसा कि हम देखते हैं, भारतीय लोगोंको पुर्तगाली भूभागमें प्रवेश करके सत्याग्रहका आश्रय लेनेके लिअे तैयार करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। अिसका ध्येय पुर्तगालकी हुकूमतसे गोआको मुक्त करानेका है। यह अिस कार्रवाअीका विश्लेषण करनेका स्थान नहीं है। मैं केवल यह कहनेके लिअे यह दृष्टान्त दे रहा हूं कि अुस प्रयत्नके जरिये अिस क्षेत्रमें अेक प्रकारकी अहिंसक कार्रवाअी हमारे सामने आ रही है। सत्याग्रहके नाते वह विदेशी भूभागमें प्रवेश करनेका रूप लेती है और अिस तरह किसी हद तक आन्तर-राष्ट्रीय कानून तोड़नेका प्रश्न खड़ा करती है। जिस कानूनको तोड़ना हो, वह नीतिशास्त्र और सदाचारकी दृष्टिसे बुरा होना चाहिये। दूसरे पहलूसे अिस प्रश्नका विचार किया जाय तो यह देशकी सरकारसे अलग, जिसने पुर्तगालके खिलाफ युद्धकी घोषणा नहीं की है, भारतके लोगों द्वारा गोआ पर अहिंसक आक्रमण कहा जा सकता है।

अिस मुद्देकी अधिक चर्चा करना यहां अप्रस्तुत होगा। यहां ध्यानमें रखनेकी मुख्य बात यह है कि हमारे देशवासी अिसे निहायत जरूरी मानते हैं कि पुर्तगाली हुकूमतसे गोआको मुक्त करके अुसे पुनः भारतमें मिला लिया जाय। और कुदरती तौर पर या भौगोलिक दृष्टिसे गोआ भारतका अंग है भी। क्या अिसके लिअे कोअी सत्याग्रही या अहिंसक अुपाय है? सत्याग्रहका सिद्धान्त कहता है कि अैसा अुपाय हो सकता है। हमारे पास आन्तर-राष्ट्रीय मामलोंमें भी न्याय और विवेककी स्थापनाका अहिंसक और शांतिपूर्ण अुपाय होना चाहिये। अुस पर पहुंचनेका काम केवल दुनियाकी प्रजाओंका ही नहीं है, बल्कि अुनकी सरकारोंका भी है। संयुक्त राष्ट्रसंघको, अगर मानव जगतके लिअे अुसके अस्तित्वका कोअी अर्थ है, अिस बातका समर्थन करना और अिस दिशामें प्रयत्न करना चाहिये। अगर मानव जगत चाहता है, और वह हृदयसे चाहता है, कि अुसके व्यवहारोंमें युद्धका अन्त हो जाय तो संयुक्त राष्ट्रसंघको 'युद्धका नैतिक (या अहिंसक) विकल्प' खोज निकालना चाहिये और अुसे मूर्त रूप देना चाहिये। वह विकल्प सत्याग्रह है। वह अुपलब्ध सारे प्रसिद्ध वैधानिक अुपायोंको आजमा लेनेके बाद आरंभ होता है। आन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्रमें अैसा अुपाय है सामनेवालेको विवेकपूर्ण और शांतिपूर्ण ढंगसे समझानेका प्रयत्न, जिसके पीछे सत्यपूर्ण कूटनीति और अपने ध्येयके न्यायपूर्ण होनेका बल रहना चाहिये। विरोधीके साथ अहिंसक असहयोग करना या कूटनीतिक और आर्थिक सम्बन्ध तोड़ देना भी अेक सहायक और स्वीकृत अुपाय है। सरकारके अहिंसक असहयोगके कदमोंके साथ पीड़ित प्रजा अैच्छिक सहयोग करे तो अिस अुपायको मजबूत बनाया जा सकता है। और सरकार भी सत्याग्रहके साथ सहानुभूति प्रकट कर सकती तथा अुसे मदद पहुंचा सकती है, जैसा कि अगर मुझे ठीक याद है तो लार्ड हार्डिजने रंगद्वेषके खिलाफ भारतीयों द्वारा किये गये दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके मामलेमें किया था।

अिसके बाद लोगोंके हाथमें सविनय कानूनभंगका हथियार रहता है। आज जिसे गोआका सत्याग्रह कहा जाता है वह अिसी का रूप है, यद्यपि मुझे डर है कि वह सत्याग्रहके बजाय अेक प्रकारका निष्क्रिय प्रतिरोध ही अधिक है। कोअी सच्ची सविनय कानूनभंगकी कार्रवाअी तभी की जा सकती है जब अुसके लायक कोअी खास मुद्दा हो या जब हमने सारे वैधानिक अुपाय आजमाकर देख लिये हों और अुनकी सफलताकी ओरसे हम बिलकुल निराश हो चुके हों। यह हमने अभी किया नहीं है। हमारी सरकार अुन अुपायोंके जरिये यह प्रश्न हल करनेकी आशा रखती है। भारत जैसे स्वतंत्र लोकतंत्रमें आन्तर-राष्ट्रीय नीतिके विषयमें जनता और सरकार अेकमत होनी चाहिये। यही चीज सत्याग्रहको भी लागू होती है। यह समझना चाहिये कि गोआनियोंसे अलग भारतवासियोंके लिअे गोआका प्रश्न केवल घरेलू प्रश्न नहीं है, वह आन्तर-राष्ट्रीय प्रश्न है; और भारतकी जनता तथा सरकार दोनोंने अत्यंत स्वाभाविक रूपमें अूपर बताये गये सत्याग्रहकी नीतिका ही आसरा लिया है। दूसरे शब्दोंमें, भारतको अपने अितिहासके दबावसे और अपनी अनोखी परिस्थितियोंके कारण आन्तर-राष्ट्रीय मामलोंमें अहिंसक ढंगसे ही काम करना पड़ रहा है। भारतकी प्रजा और सरकार दोनों को बड़ी सावधानी और जागरूकतासे यह प्रयोग करना चाहिये — अिन दोनोंको साथ मिलकर आगे बढ़ना चाहिये और अेकमत तथा अेकध्येय होकर शांतिपूर्ण ढंगसे काम करना चाहिये।

२१-९-'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

विविध विचार

अणु और हाअिड्रोजन बमसे युद्ध-निवारण!

फार्मोसाके कारण फिर विश्वयुद्ध तो नहीं भड़क अुठेगा — यह सवाल पैदा हुआ था। पं० नेहरूने तब कहा था कि युद्ध तो नहीं छिड़ेगा, लेकिन फार्मोसाका सवाल कठिन और अटपटा जरूर है।

दूसरी तरफ अिस अर्सेमें समाचार मिले कि अिंग्लैण्ड हाअिड्रोजन बम बनाना शुरू करेगा! और जर्मनीको, जो आज निःशस्त्र है, शस्त्रसज्ज बनाया जायगा।

अुसमें राजाजीने यह बात पैदा की कि अणुबम और हाअिड्रोजन बमोंको समुद्रमें डुबो दो, वर्ना मानव-जातिका सर्वनाश हुअे बिना नहीं रहेगा। परन्तु अुनकी बात कौन सुनता है? फौजें रखनेवाले भारतकी वाणीमें यह ताकत भला कैसे आ सकती है? फिर भी भारतके अितिहासकी वजहसे अुसके पास शांतिकी कुछ शक्ति है, जिसके आधार पर जवाहरलालजी दुनियाके राष्ट्रोंमें न्यायी पंच बन सके हैं। लेकिन अमेरिका और रूस किसीकी जल्दी सुननेवाले नहीं हैं।

फिर भी युद्ध नहीं होगा, अैसा किस आधार पर कहा जाता है? माना यह जाता है कि हाअिड्रोजन बमका डर ही लड़ाअीको रोक रहा है। बर्ट्रान्ड रसलकी अैसी मान्यता है। वे जवाहरलालजीसे कहते हैं कि अणुबम और हाअिड्रोजन बमके सम्बन्धमें जांच करके अुससे होनेवाले नुकसानकी तरफ संसारका ध्यान खींचनेके लिअे अेक समिति नियुक्त कीजिये। अभी कुछ समय पहले अुन्होंने अिस सम्बन्धमें अेक परिषद् भी की थी। ठीक है, परन्तु अुससे भी क्या होनेवाला है? बेशक, अिन बमोंके डरसे मनुष्य काबूमें रहता है — नरकके डरसे पापसे डरता है अुसी तरह। लेकिन अिससे स्वर्गकी प्राप्ति नहीं हो सकती — अिससे युद्धके अन्तका ध्येय सिद्ध नहीं हो सकता।

युद्ध-निवारणके सम्बन्धमें दूसरे अेक वर्गके विचारक आर्थिक मार्ग अपनानेकी बात सोचते हैं। अुनका मत है कि युद्धके कारण राष्ट्रोंकी दूषित अर्थनीतिमें निहित हैं। अुस नीतिमें सुधार किया जाय तो युद्ध-मानस नहीं रहेगा। कहनेका अर्थ यह कि राष्ट्रोंको स्वार्थ, धनलोभ वगैरा वृत्तियों पर संयम रख कर अन्य सब राष्ट्रोंके साथ भाअीचारा और मित्रताका व्यवहार रखनेका धर्म ग्रहण करना चाहिये। बेशक, केवल डर रखनेके बजाय यह धारण बल सक्रिय और हकार-वाचक है। परन्तु अुससे भी काम नहीं चलेगा।

अन्तमें तो यह भावना ही स्थिर और दृढ़ होनी चाहिये कि मनुष्य अवध्य है। यह भावना श्रद्धा और विश्वाससे पैदा हो सकती है। यह वस्तु धर्मबल या जीवात्माके आत्मबलसे ही सिद्ध हो सकती है। लेकिन दुनियाका अेक भी धर्म अिसे स्वीकार करता है? देहान्त-दंड, धर्मयुद्ध, क्षत्रियधर्म, शस्त्रसे भी स्वरक्षाका धर्म वगैरा बातोंको जब तक धर्म ठीक मानते हैं, तब तक युद्ध-निवारण हो ही कैसे सकता है? मानव अवध्य है, अिस भूमिका पर किसी न किसी कारणसे जब तक हम नहीं पहुंचते, तब तक युद्ध-निवारणका ध्येय सच्चे आधार पर खड़ा नहीं हो सकता।

[पुनश्च: पांच-छह महीने पहले लिखी हुअी यह टिप्पणी फिरसे देख कर और कहीं कहीं कालको सुधार कर यहां दी जा रही है।]

१९-८-'५५

साम्राज्यवादका अन्त

अिंडोनेशियामें बांडुंग परिषद् सफलतापूर्वक पूरी हुअी, यह दुनियामें शांतिके लिअे लड़ी जानेवाली लड़ाअीका अेक महत्त्वपूर्ण सीमा-स्तंभ कहा जायगा। अिसके लिअे परिषद्में आये हुअे सब देश और अुनके प्रतिनिधि धन्यवादके पात्र हैं। भारत और चीनके प्रधानमंत्रियोंने परिषद्में जो काम किया, वह परिषद्की सफलताके लिअे महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अिसलिअे ये दोनों देश विशेष गौरव अनुभव कर सकते हैं।

परिषद् बुलानेवाले अग्नि-अेशियाके पांच राष्ट्र थे — भारत, पाकिस्तान, लंका, ब्रह्मदेश और अिंडोनेशिया। सब कोअी जानते हैं कि अिन पांचोंमें भी अेक-दृष्टि नहीं है। लंकाका वहां रहनेवाले भारतीयोंके नागरिक हकोंके बारेमें भारतके साथ झगड़ा चल रहा है। पाकिस्तानके साथ भारतका झगड़ा तो सर्वविदित है; वह लंकाके झगड़ेसे बड़ा और गहरा है। अेक भारतसे अुत्पन्न हुअे तीन राष्ट्रोंमें से तीसरा राष्ट्र है ब्रह्मदेश। अिस राष्ट्रके साथ भारतका प्रेमका मीठा सम्बन्ध है, यह अीश्वरकी बड़ी कृपा है।

अिस परिषद्में शरीक न हुअे राष्ट्रोंका ध्यान भी अुसकी ओर कुछ कम आकर्षित नहीं हुआ था। अमेरिका दूरसे परिषद्की कार्रवाअीको देखा करता था और गुप्त रूपसे जो असर या परोक्ष हस्तक्षेप किया जा सकता हो वह करनेका अुसका अिरादा था, अैसा समाचारपत्रोंका अनुमान है। अैसा माना जाता है कि लंका और पाकिस्तानने अिस बातमें अमेरिकाकी काफी मदद की। परिषद् बुलानेवाले राष्ट्रोंमें चाहिये अुतनी हद तक अेकदिली नहीं थी। अिसका असर परिषद्की सफलता पर पड़े बिना कैसे रह सकता था? फिर भी वह सफल हुअी, यह अेक बड़ी बात कही जायगी।

परिषद्में अेकत्र हुअे सारे राष्ट्र 'यूनो' के सदस्य नहीं थे। फिर भी अुन्होंने 'यूनो' के सिद्धान्तोंकी मर्यादा घोषित करके अपना विचार-विमर्श किया।

मुख्य बात यह थी कि अफ्रीकाके कितने ही देशोंके प्रतिनिधि शायद पहली ही बार अैसी किसी परिषद्में शामिल हुअे थे। अिस परिषद्में यह बात छिपी थी कि दुनियाका अितिहास नयी दिशा पकड़ रहा है; अेशिया और अफ्रीका पर हुकूमत कायम करके गअी सदीसे दौलतमन्द बने हुअे गोरे राष्ट्रोंके लिअे वह अेक चुनौती थी। अिस वर्तमान शताब्दीमें युरोपके देशोंके साथ अब अमेरिका भी शामिल हुआ है, यह नयी बात है।

अेशिया और अफ्रीका

गोरोंकी जालमें फंसे हुअे दो भूखण्डोंमें अेशिया आगे बढ़ा हुआ है। अफ्रीकामें अभी साम्राज्यशाहीके विरोधका प्रभात ही हुआ है। अग्नि-अेशियामें साम्राज्यशाहीके कुछ अवशेष हैं, जिनका कब्जा छोड़नेके लिअे फ्रान्स अभी भी तैयार नहीं है। फिर भी कुछ समय पहले हुअी जिनेवा परिषद्ने अिस बातको आगे बढ़ानेमें कुछ मदद की है। अलबत्ता, अुसमें विघ्न डालनेकी युक्तियां तो चल ही रही हैं।

भारतमें साम्राज्यशाहीके जो अवशेष थे, अुनमें से फ्रान्स तो अपने हिस्सोंको छोड़कर चला गया। परन्तु पुर्तगाल अैसा करनेके लिअे तैयार नहीं है। अिसके फलस्वरूप आज अेक गंभीर प्रश्न दुनियामें खड़ा होता दिखाअी दे रहा है।

अफ्रीकामें दो बड़ी साम्राज्यवादी सत्तायें हैं — अिंग्लैण्ड और फ्रान्स। दोनों अिस लाभको छोड़नेके लिअे तैयार नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीकामें रंगद्वेषकी शर्मनाक नीतिसे काम लिया जा रहा है। अुस देशकी सरकार समझ गअी है कि स्वतंत्र भारतका अुदय और अुसकी विचारसरणी साम्राज्यवादके लिअे भयरूप है। अिसलिअे मौका आने पर वह देश हम पर अपनी चिढ़ निकालने और

www.vinoba.in

हमें भला-बुरा कहनेमें कभी चूकता नहीं। केनियामें दूसरे ढंगसे काम किया जाता है। परन्तु बात अेक ही है — गोरी प्रजाओंको वहां जीविकाका जो साधन प्राप्त है, अुसे यथासंभव वे छोड़ना नहीं चाहतीं।

भारतकी विदेश-नीति

अफ्रीकाके राष्ट्र भारतके पड़ोसमें हैं; युरोप अुनसे दूर पड़ता है। तथा युरोपकी अुन्हें कोअी मदद या अुनके प्रति कोअी सद्भावना नहीं है, जब कि भारतकी अुनके प्रति काफी सद्भावना है। अिस कारणसे भारतके साथ प्राचीन कालसे अुनका जो सम्बन्ध था, वह अिस नये युगमें फिरसे बंधता जा रहा है। अग्नि-अेशियाके देशोंके साथ अिस हद तक हमारा सम्बन्ध नहीं बंध रहा है, अिसका सूक्ष्म कारण यह हो सकता है कि पाकिस्तान और लंकाके साथ हमारी मित्रता और अेकदिली नहीं हो सकी है।

ये दोनों देश दुनियाकी राजनीतिके विषयमें भारत जितने जाग्रत नहीं हैं; वे अपना-अपना काम संभालनेमें अधिक लगे हुअे हैं। अिसके लिअे जिन गोरे राष्ट्रोंके साथ मेलजोल रखना वे हितकारी समझते हैं अुन्हें विदेश-नीतिके खयालसे मुख्यतः दृष्टिमें रख कर चलते हैं।

भारतने अपने आन्तरिक प्रश्न हल करनेमें स्वावलंबनकी नीति स्वीकार की है, अिसलिअे हमें गोरे राष्ट्रोंकी गरज नहीं रही। अमेरिकाने पैसेकी मददकी जालमें फंसाना तो चाहा था, परन्तु हम अुसमें फंसे नहीं, यह बड़ी बात है। अिसी कारणसे हम अपनी विदेश-नीति अेकदम शांतिकी नींव पर खड़ी कर सके और अुसका प्रभाव अेशियाअी परिषद्, बांडुंग परिषद् वगैरा द्वारा सारे संसारके राष्ट्रों पर पड़ सका है।

भारतकी यह प्रगति शायद अिंग्लैण्ड और अमेरिकाके राजपुरुषोंको मानहानि करनेवाली लगी। ये दोनों जगतका मार्गदर्शन करनेका अभिमान रखनेवाले महासत्ताधीश राष्ट्र हैं। यदि अुन्हें — अिंग्लैण्डके चर्चिल जैसे पुरुषोंको — यह लगे कि 'कल तक जो भारत हमारे अधीन था वही आज हमसे प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है,' तो अुनकी यह भावना समझमें आ सकती है। अतः वे भारतकी कठिनाअीसे लाभ अुठाकर अुसे और कठिनाअीमें फंसाना चाहें तो यह स्वाभाविक होगा। अैसी राजनीतिक चाल भी सर्वविदित है।

यह दीयेके प्रकाशकी तरह स्पष्ट है कि पाकिस्तान, गोआ, और लंका अैसे राजनीतिक खेलके लिअे अच्छे स्थान हैं। अैसा न हो तो वे भारत जैसे अपने शांतिप्रिय पड़ोसी राष्ट्रके साथ अनुचित या अन्यायपूर्ण बातें क्यों करें? अैसी छिपी मदद अगर पुर्तगालको आज धोखेमें डाल रही हो, तो कोअी आश्चर्यकी बात नहीं। भारतको अपनी नीतिकी सत्यतासे और शांतिनिष्ठा द्वारा यह मदद बंद करानी है। अिस काममें वह शस्त्रबलका अुपयोग नहीं करेगा, अैसी टेक अुसने घोषित की है। अर्थात् जगत्के राष्ट्रमतको अिस तरह शिक्षित बनाकर दुनियामें आज भी जो राष्ट्र साम्राज्यवादके लाभ छोड़ना नहीं चाहते अुनसे वे लाभ अुसे छुड़वाने हैं। भारतकी विदेश-नीति अिस प्रकार शुद्ध शांति और युद्ध-निषेधकी दृढ़ भूमिका ग्रहण करती जा रही है। अिस अत्यन्त अर्थगंभीर वस्तुकी ओर भारतके नागरिकोंका ध्यान जाना चाहिये। अितना ही नहीं, अुनकी शिक्षा अिसी दिशामें होने लगनी चाहिये।

१९-८-'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

खादी हुण्डियां खरीदो

[अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्डके अध्यक्ष श्री वैकुण्ठभाअी महेताने जनताके नाम निम्नलिखित अपील प्रकाशित की है:]

खादी आन्दोलनके अितिहासमें पहली बार हमारे देशकी सरकारने खादी हुण्डियोंकी बिक्रीकी जिम्मेदारी सीधी अपने अूपर ली है। खादी हुण्डियां अिस बार लोगोंको १५ सितम्बरसे देश-भरमें हर जगह फैले हुअे चालीस हजार डाकखानोंसे प्राप्त होंगी।]

खादी हुण्डियोंके अितिहासमें जानेकी और यह बतानेकी कि खादी हुण्डियोंकी बिक्री किस तरह हमारे खादी आन्दोलनका अेक अभिन्न हिस्सा बन गयी, मैं आज जब कि लोग अुनसे काफी परिचित हो गये हैं कोअी आवश्यकता नहीं देखता। आजादीके पहले खादीके काममें लगी हुअी संस्थाओंको खादीका अुत्पादन बढ़ानेके लिअे आवश्यक पैसा पानेमें अनेक कठिनाअियां होती थीं। खादी हुण्डियोंके जरिये खादीकी खरीदार जनतासे पेशगी पैसा प्राप्त हो जाता था और अिस तरह सुदूर देहातोंमें लाखों कातनेवालोंको लगातार काम देना संभव हो जाता था। कातनेवालोंमें अधिकांश स्त्रियोंका है। कताअीसे अुन्हें जो थोड़ी-सी आमदनी हो जाती है, वही अुनका मुख्य आधार और जीविकाका साधन है। ये हुण्डियां अुस समय खादी पैदा करने और बेचनेके काममें लगी हुअी संस्थाओंके द्वारा अपने अपने क्षेत्रमें जारी की जाती थीं और कार्यकर्ताओं तथा अेजेण्टोंके जरिये बेची जाती थीं।

स्वराज्यके बाद, खादीके अुत्पादन और बिक्रीमें पूंजी लगानेकी जिम्मेदारी सरकारने अुठा ली है और अिसलिअे अुसे पैदा करनेके काममें पैसेकी कमीकी बाधा तो नहीं आती। लेकिन समाजके विभिन्न वर्गोंमें खादीका प्रचार करनेकी और अुनमें अपने लाखों गरीब देशवासियोंके प्रति सक्रिय सहानुभूति जगानेकी आवश्यकता कायम है।

पिछले वर्ष खादीके अुत्पादन और बिक्रीमें लगी हुअी विभिन्न संस्थाओंसे खादी हुण्डियोंकी बिक्रीका यह काम अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने ले लिया और अुन्हें राष्ट्रीय पैमाने पर जारी किया। डाकखानोंके जरिये अिन हुण्डियोंकी बिक्री भी अिसी बार शुरू हुअी। जनतासे तथा प्रान्तोंमें और केन्द्रमें सरकारी अधिकारियोंसे जो सहकार प्राप्त हुआ, वह बहुत अुत्साहजनक था। ७०,००,००० रु० से भी ज्यादा कीमतकी हुण्डियां बेची गयीं। अुससे प्रगट हुआ कि जनता अेक योग्य कार्यकी सहायता करनेके लिअे कितनी तैयार है। और अिन दिनों जब कि देश पर देहाती बेकारी और विशाल अर्धबेकारीकी छाया मंडरा रही है, तब अिन लाखों लोगोंको काम-धंधा तथा मजदूरीका आश्वासन देनेसे ज्यादा योग्य कार्य कोअी दूसरा नहीं है। खादीकी हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअी लाखों लोगोंको काम-धंधेका अवसर प्रदान करती है। खादी हुण्डियां खरीदकर जनता अिन लाखों असहायोंके प्रति न केवल अपनी सहानुभूतिका बल्कि खादी जिस अुद्देश्यको सिद्ध करना चाहती है, अुसके प्रति अपने सक्रिय समर्थनका परिचय और प्रमाण देती है।

पिछले वर्ष बोर्डको यह अनुभव आया कि राष्ट्रीय पैमाने पर खादी हुण्डियोंकी बिक्रीका कार्य संघटित करनेके लिअे सैकड़ों कार्यकर्ताओंकी सेवा चाहिये। अितना बड़ा संघटन खड़ा करने और अुतने कार्यकर्ता जुटानेमें काफी खर्च पड़ेगा। गत वर्षके अनुभवने यह भी बताया कि देशके ४०,००० डाकखानोंका अुपयोग अिस कामके लिअे बड़ी सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

भारत-सरकारके डाक-तार मंत्रालय और अिस विभागके अधिकारियोंके अनुग्रहसे बोर्डके लिअे अिस साल खादी हुण्डियोंकी बिक्रीकी

व्यवस्था देशके ४०,००० डाकखानोंके जरिये करना संभव हुआ है। तो खादी हुण्डियां लोगोंको १५ सितम्बरसे देशके सारे डाकखानोंमें मिलेंगी। बोर्डने यह तरीका अिसलिअे अपनाया है कि अुससे अेक ओर तो संघटन और हिसाब-किताब रखनेका काम आसान हो जाता है और दूसरी ओर हरअेक व्यक्तिको खादीके हितमें स्वेच्छा-पूर्वक सेवा करने और अपने लाखों लाचार देशवासियोंके कल्याणका संवर्धन करनेका अवसर मिलता है। बोर्ड आशा करता है कि अुससे संम्बद्ध संस्थायें और अन्यान्य व्यक्ति अपने नजदीकके डाकखानेसे पैसा देकर खादी हुण्डियां प्राप्त करेंगे और जैसा कि अभी हर साल होता आया है, अुसी तरह दूसरोंको बेच देंगे। डाकखानोंके जरिये अिन हुण्डियोंकी बिक्री लोगोंकी सेवा-भावनाके लिअे चुनौती-रूप है; वह अुन्हें खादी जिस अुदात्त अुद्देश्यका प्रतिनिधित्व करती है, अुसकी सिद्धिके लिअे स्वेच्छापूर्वक अपनी सेवाअें अर्पित करनेका न्यौता देती है। अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड तीव्रतापूर्वक आशा करता है कि लोग, वे जहां कहीं भी हों, बड़ी संख्यामें अपने पासके डाकखानोंमें जाकर अपने अुपयोगके लिअे और दूसरे मित्रोंको बेचनेके लिअे हुण्डियां खरीदेंगे।

[मैं दो शब्द स्कूलों और विद्यार्थियोंके लिअे जोड़ता हूं। दरिद्र-नारायणकी सेवाके लिअे आयोजित खादी हुण्डियां बेचनेके अिस राष्ट्रीय कार्यमें वे काफी बड़ा हिस्सा अदा कर सकते हैं। अुदाहरणके लिअे, कुछ विद्यार्थी मिलकर या अेक अकेला ही १० या ज्यादा रुपये जुटाये और अुनकी खादी हुण्डियां खरीदे। अिनको वे बेच दें और पुनः खरीदने और बेचनेका यह क्रम जारी रखें। अिस तरह बहुत थोड़ी रकमसे सैकड़ों रुपया कीमतकी हुण्डियां बेची जा सकती हैं। विद्यार्थियोंकी संस्थाअें और स्कूल भी अिस तरहकी बिक्रीका संघटन कर सकते हैं। और भारतके लाखों गरीबोंके हितार्थ राष्ट्रीय सेवा करनेका श्रेय कमा सकते हैं।

२२-९-'५५ —म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

मेरी कल्पनाका भारत

स्वाधीनता नीचेसे आरंभ होनी चाहिये। अिस प्रकार हर गांव अेक प्रजातंत्र या पंचायत होगा, जिसे पूरी सत्ता होगी। अिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक गांवको स्वावलंबी और अपना प्रबंध आप कर लेने लायक बनना होगा, यहां तक कि वह सारे संसारसे अपनी रक्षा कर सके। अुसे बाहरके किसी हमलेसे अपनी रक्षा करनेके प्रयत्नमें मर मिटनेकी तालीम दी जायगी और तैयार किया जायगा। अिस प्रकार अन्तमें व्यक्तिकी ही अिकाअी होगी। अिसमें पड़ोसियोंसे या संसारसे स्वेच्छापूर्वक सहायता लेने या अुन पर निर्भर रहनेका बहिष्कार नहीं होगा। दोनों ओर शक्तियोंका मुक्त और स्वेच्छापूर्ण आदान-प्रदान होगा। अैसा समाज अवश्य ही अुत्तम संस्कृति और सभ्यतावाला होगा, क्योंकि अुसमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष यह जानेगा कि अुसे क्या चाहिये और अिससे भी अधिक वह यह जानेगा कि किसीको भी अैसी चीजकी अिच्छा नहीं करनी चाहिये, जो दूसरोंको समान श्रमसे न मिल सकती हो।

अैसे समाजका आधार स्वभावतः सत्य और अहिंसा पर ही हो सकता है और मेरी रायमें अीश्वरमें जीते जागते विश्वासके बिना सत्य और अहिंसा पर चलना संभव नहीं है। अीश्वरका अर्थ है अेक स्वयंभू सर्वशक्तिमान चेतन शक्ति, जिसमें संसारकी अन्य सारी शक्तियां समा जाती हैं। वह किसी पर निर्भर नहीं है और जब और सब शक्तियां नष्ट हो जायंगी या काम करना बन्द कर देंगी, तब भी वह कायम रहेगी। अिस सर्वव्यापक चेतन प्रकाशमें श्रद्धा हुअे बिना मैं अपने जीनेका कोअी कारण नहीं बता सकता।

अैसा समाज अनगिनत गांवोंका बना होगा। अुसका फैलाव अेकके अूपर अेकके ढंगका नहीं, बल्कि लहरोंकी तरह अेकके बाद अेकके रूपमें होगा। जीवन अेक मीनारकी शकलमें नहीं होगा, जहां अूपरकी तंग चोटीको नीचेके चौड़े पाये पर खड़ा रहना पड़ता है। अुसमें तो समुद्रकी लहरोंकी तरह जीवन अेकके बाद अेक घेरेकी शकलमें होगा, और व्यक्ति अिनका केन्द्र होगा। यह व्यक्ति सदा गांवके लिअे मिटनेको तैयार रहेगा, और गांव ग्रामसमूहके लिअे मिटनेको तैयार रहेगा। अिस तरह आखिर सारा समाज अैसे लोगोंका बन जायगा, जो मगरूर बनकर कभी किसी पर हमला नहीं करते, लेकिन हमेशा नम्र रहते हैं और अपनेमें समुद्रकी अुस शानको महसूस करते हैं, जिसके वे अभिन्न अंग हैं।

अिसलिअे सबसे बाहरका घेरा अपनी सत्ता और शक्तिका अुपयोग भीतरी घेरेको कुचलनेमें नहीं करेगा, बल्कि अुसके भीतरके सब लोगोंको बल देगा और स्वयं अुनसे बल ग्रहण करेगा। मुझे यह ताना दिया जा सकता है कि यह सब खयाली पुलाव है और अिसलिअे जरा भी विचारणीय नहीं है। यदि युक्लिडकी परिभाषा-वाले बिन्दुका किसी भी व्यक्ति द्वारा चित्रित न किये जा सकने पर भी अविनाशी मूल्य रहा है, तो मेरा चित्र भी मानव-जातिके जीवित रहनेके लिअे अपना मूल्य रखता है। यह चित्र पूरी तरह तो कभी सिद्ध नहीं होगा, फिर भी हिन्दुस्तानको अिस सच्चे चित्रके लिअे जीना चाहिये। अिस तक पहुंचना हिन्दुस्तानकी जिन्दगीका मकसद होना चाहिये। हमें क्या चाहिये, अुसके लिअे हमारे पास ठीक चित्र होना चाहिये। तभी हम अुससे मिलती-जुलती कोअी वस्तु प्राप्त कर सकते हैं। अगर हिन्दुस्तानके प्रत्येक गांवमें कभी प्रजा-तंत्र या पंचायती राज्य कायम हुआ, तो मेरा दावा है कि मैं अपने अिस चित्रकी सचाअी साबित कर सकूंगा, जिसमें आखिरी व्यक्ति पहले व्यक्तिके बराबर होगा या दूसरे शब्दोंमें कहें तो कोअी भी व्यक्ति न पहला होगा, न आखिरी।

अिस चित्रमें प्रत्येक व्यक्तिके लिअे पूरा और बराबरका स्थान है। हम सब अेक शानदार पेड़के पत्ते हैं, जिसका तना जड़से नहीं हिलाया जा सकता, क्योंकि वे पृथ्वीके गर्भमें गहरी चली गअी हैं। जबरदस्त से जबरदस्त आंधी भी अुसे हिला नहीं सकती।

अुसमें अैसे यंत्रोंकी गुंजाअिश नहीं है जो मानव-श्रमका स्थान ले लें और मुट्ठीभर लोगोंके हाथमें सत्ताको केन्द्रित कर दें। सुसंस्कृत मानव परिवारमें श्रमका अपना अपूर्व स्थान होता है। प्रत्येक अैसे यंत्रके लिअे अुसमें जगह होती है, जो प्रत्येक व्यक्तिके लिअे सहायक होता है। परंतु मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मैंने कभी बैठकर नहीं सोचा कि यह यंत्र क्या हो सकता है? मैंने सिंगर मशीनका खयाल किया है। परंतु वह विचार भी मुझे यों ही आ गया। मेरा चित्र पूरा करनेके लिअे मुझे अुसकी जरूरत नहीं है।

पंचगनी, २१-७-'४६ गांधीजी

हरिजन, २८-७-'४६

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

लेखक: गांधीजी

संपादक: भारतन् कुमारप्पा

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
स्वराज्य, ग्रामराज्य और रामराज्य	विनोबा	२४१
सत्याग्रह और विदेशी मामले	मगनभाई देसाई	२४४
विविध विचार	मगनभाई देसाई	२४६
खादी हुण्डियां खरीदो	वैकुण्ठभाअी महेता	२४७
मेरी कल्पनाका भारत	गांधीजी	२४८

www.vinoba.in